उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की ख़ुदी सूरते फ़ौलाद।

ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल

(मासिक)

रजि: **RAJH/9396** पोस्ट रजि. नं.**RJ/SR/29/12/2006-08** 7, अगस्तः 2008 वर्ष –16 अंक 2 मूल्य 3 रु वार्षिक 35/– रु.

स्टुडेंट वेलफेयर सोसायटी ने विलादते अमीरूल मूमिनीन मनाया

उदयपुर 13, जुलाई । मौलाए कायनात अमीरूल मूमिनीन की विलादते के मौके पर स्टुडेंट वेलफेयर सोसायटी की जानिब से एक प्रोग्राम मुनाअकिद् किया गया। प्रोग्राम की शुरूआत आसिब पलाना के तिलावते कलाने पाक से हुआ। जिसके मुख्य अतिथी शहर के प्रमुख उद्यमी श्री घनश्याम कृष्णावत, विशिष्ठ अतिथी मशहुर क्रिकेट खिलाड़ी व अंतराष्ट्रीय एम्पायर श्री मधुसूदन राणावत रहे अध्यक्षता आबिद अदीब सहाब ने की। इस मौके पर 8 साल के अफरोज़ अहमद खोलिया वाला ने इमाम आली की जिंदगी पर प्रकाश डाला जिसे पूरी सभा की और से सराहा गया।

आयोजन में शहीद रजब अली मेमोरियल टूर्नामेन्ट में जीत हासिल करने वाले बच्चों को इनामात भी तकसीम किये गये। बच्चों की खेल में दिलचस्पी का अदांजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि इस खेल में कुल 485 प्रतिभागी थे। आयोजन में सेक रेस, हर्डल रेस, थ्री लेग रेस, साईकिल रेस, केरम, चेस, टेबल टेनिस, क्रिकेट, चेयर रेस आदि के टूर्नामेन्ट रखे गये।

इस मौके पर बोलते हुए श्री मधुसूदन राणावत ने बताया कि खेलों की हमारे जीवन निर्माण में महत्ती भूमिका होती है। बच्चों के भविष्य निर्माण में खेल भी एक विषय बन चुका है। मैं पिछले 35 सालों से समुदाय से सम्बध हुँ। समुदाय सहत, संस्कार और खेल को पूरा महत्व देता है। इसीलिये काफी पहले यहां बच्चों की क्रिकेट कल्बें हुआ करती थी जो इन तीनों गुणों के निर्माण में सहायक होती थी।

मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि बच्चों में इस भवना का फिर से विकास हो रहा जो समय की मांग है। आपने रजब अली मेमोरियल टुर्नामेन्ट में जीत हासिल करने वाले बच्चों को इनाम तकसीम किये।

श्री घनश्याम कृष्णावत ने अपने उद्घोष में कहां कि जिस तेजी से संस्कृति का हास हो रहा है वह न सिर्फ स्वंय बल्कि परिवार, समुदाय व अंततः देश के पतन का कारण बनेगा। आपने मेवाड़ की सांस्कृतिक धरोहर को सजीव बनाने के लिये संस्थागत प्रयास का अह्वान किया व बोहरा यूथ द्वारा सम्प्रादायिक सोहार्द के लिये किये गये प्रयासों को सराहा। आपने क्रिकेट में विजेता रहे प्रतिभागीयों को परितोषिक वितरित किये।

बोहरा यूथ के सचिव लियाकत अमर ने बताया कि जब से स्टुडेंट वेलफेयर ने खेलों का अयोजन करना शुरू किया है तब से मैं प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जुड़ा हूँ। बोहरा समुदाय का खेल से जुड़ाव लम्बे समय से रहा है। और समुदाय में खेल के विकास के लिये कई कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। परन्तु अब तक राष्ट्रीय स्तर तक कोई प्रतिभा नही सामने आ पायी है। इस दिशा में बोहरा यूथ ने संस्थागत प्रयास शुरू करते हुए बोहरा यूथ ने स्पोंटस् अकादमी की बुनियाद डाली। मैं सभी प्रतिभागीयों से विनती करता हुँ कि इसका ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाये। मुझे खुशी है कि इस बार क्रिकेट मे 7 टीमों ने हिस्सा लिया और BASE का पूरा फायदा भी उठाया गया।

कृष्णावत जी एक उद्यमी बाद में पहले बहुत अच्छे खिलाड़ी रह चुके हैं। आपके साथ मैंने जीवन का बहुत अच्छा समय गुजारा है। आपका सांस्कृतिक धरोहर बचाने का प्रयास सराहनीय है। बोहरा यूथ का एक ध्येय शहर में सम्प्रादायिक सोहार्द पैदा करना भी है। बोहरा यूथ की कोशिशों से उदयपुर में धार्मिक अवसरो को संयुक्त रूप से मनाने का परम्परा वजूद में आयी। बोहरा यूथ कृष्णावत जी के प्रयासों मे हर संभव मदद करने को सदा तत्पर रहेगी।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में दाउदी बोहरा जमाअत के चेयरमेन आबिद अदीब साहब ने आयोजन को सफल बनाने के लिये कार्यक्रताओं के सहयोग के लिये उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर आपने हजरत अली की फजीलतें बयान करते हुए मुबारक बाद पेश की और स्टुडेन्ट वेलफेयर सोसायटी को पुनः सक्रीय बनाने के लिये सभी छात्र छात्राओं को सराहा और विशेषतः तौसीफ मण्डी वाला व तौसीफ टीडी वाला को सम्मानित किया। आपने बताया बच्चों का होंसला देखते हुए बोहरा यूथ अदोंलन उम्र 35 साल और बढ़ गयी। सभी अगानुतकों से स्टुडेन्टस के सम्मान मे खड़े होकर अभिवादन किया। जनाब सालेद मोहम्मद नायाब ने मौला अली की फजीलते बयान की। एवं जनाब ईस्माईल अली बिस्किट वाले ने भी अपने विचार रखे। संचालन फरहाद हुसैन मंडीवाला एवं शाहीन डी.एम. ने किया।

कार्यक्रम के अंत मे सोसायटी के अध्यक्ष तौसीफ टीडी वाला ने धन्यवाद् ज्ञापित किया।

अगस्त माह के आयोजन ....

◆ 9 अगस्त 2008 बरोज़ शनिवार रात 8.00 बजे रसुलपुरा मस्जिद में जनरल मीटिंग रखी गयी है। मीटिंग जनाब असगर अली इंजीनियर साहब खिताब करेंगे। इसके बाद सेंटरल बोर्ड दाउदी बोहरा कम्यूनिटी के नये मेम्बरों को हलफ उठाने की रस्म होगी।

◆ 10 अगस्त 2008 रविवार को सेंटरल बोर्ड ऑफ दाउदी बोहरा कम्युनिटी के एक्जीक्युटिव कमेटी की मीटिंग कम्युनिटी हॉल में रखी गई है। मीटिंग मैं उदयपुर के अलावा नीमच, अहमदाबाद, मालेगांव, हैदराबाद, मुम्बई वगेराह से कई मेम्बर हज़रात शिरकत करेगें।

◆ 17, अगस्त 2008 बरोज रविवार बोहरा यूथ की जनिब से आम पिकनिक रखी गई है जिसका अतिया फी मेम्बर 80 रू. रखा गया है। अतिया जमा करवाने की अखिरी तारीख 10, अगस्त रखी गई है। 10, तारीख के बाद अतिया जमा करवाने पर 20 पेनल चार्ज लिया जाएगा। प्रोग्राम में शामिल होने के लिये अतिया दाउदी बोहरा जमाअत, दाउदी बोहरा वेलफेयर सोसायटी, स्टुडेंट वेलफेयर

मेडिकेयर सेंटर पर आर्थोपेडिक व फीजीयोथेरेपी सेवाएं प्रारम्भ

बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी की सालाना बैठक तारीख 18, जुलाई को कम्यूनिटी हॉल में सम्पन्न हुई।

अपनी वार्षिक रिर्पोट में सचिव सरफराज़ राज ने वर्ष 2007–08 का लेखा पेश करते हुए भविष्य योजना पर विस्तार से रोशनी डाली और बताया कि जल्द ही विंग एक पोली क्लीनिक के रूप मे कार्य करने की क्षमता अर्जित करेगा जिसे आम सभा द्वारा पास किया गया।

सोसायटी के अध्यक्ष अनीस मियाजी ने बताया कि भविष्य कार्य योजना के अनुरूप वर्तमान में आर्थोपेडीक डॉक्टर और फीजीयोथेरेपी की सेवाएं प्रारम्भ की जा चुकी है। आर्थोपेडीक की सेंवाएं डॉ मनीष अग्रवाल एवं संदीप बडाला द्वारा दी जायेगी।

इस विशेषज्ञ सेवा के प्रराम्भ में 3 दिवसीय शिविर का विधिवत शुभारम्भ दाउदी बोहरा जमाअत के अध्यक्ष आबिद अदीब ने किया। इस आयोजन मे 556 मरीजों ने भाग लिया। शिविर में सुख संजीवनी के श्री विकास जोशी व ओ.पी. महात्मा का भरपूर तआवुन रहा। समापन समारोह डॉ चमन सिंह देवड़ा सयूक्त निदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ सेवा श्री उंकार सिंह राठौड़ अध्यक्ष बी. एन. संस्थान एवं हिब्तुल्लाह अत्तारी ने किया।

अंत में सत्र् 2008 –11 के लिये चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें सर्व श्री अनीस मियाजी – अध्यक्ष, सरफराज राज – सचिव, शाकिर पृथ्वी राज – उपाध्यक्ष, असगर मूमिन –सह सचिव व हामिद अली महु वाला – एकाउंटेंट नियुक्त किये गये।

दारूल मुतालिया तुल बुरहानियां ने स्थापना दिवस मनाया

दारूल मुतालिअतुल बुरहानिया (बुरहानी लाइब्रेरी) के तत्वाधान में दिनांक 14 जुलाई 2008 को लाइब्रेरी के स्थापना दिवस के अवसर पर ''बोहरा यूथ आन्दोलन उसका भूत, वर्तमान व भविष्य'' विषय पर एक लेख प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने उत्साह से भाग लिया।

लाइब्रेरी के सचिव, श्री याकूब ज़हीर ने बताया कि कई लेख बड़े सटीक, विचारोत्तेजक व चेतना को झकझोड़ने वाले थे। अधिकाशं प्रतिभागियों ने आन्दोलन का समग्र जायज़ा लेते हुए इसके भविष्य को लेकर बड़े आशान्वित नज़र आए। आपने कहां कि यह प्रसन्नता का विषय है कि नई पीढ़ी आन्दोलन से न केवल जुड़ी हुई है बल्कि इसके भविष्य के बारे में सोचती भी रहती है, एवं उनकी लेखनी भी काफी प्रभावी है।

प्रतियोगिता के विजेताओं को ''अली डे'' के सुअवसर पर मस्जिद वजीहपुरा में दाऊदी बोहरा जमात के अध्यक्ष श्री जनाब आदिब अदीब ने पुरस्कृत किया। प्रथम पुरस्कार रूपये 1001/– का मोहतरिमा ज़ेनब बानु पिता श्री वारिस अली खाखड़ वाला ने प्राप्त किया।

मोहतरिमा सकीना बानु टीड़ी वाला, मेहजबीन बड़ौदावाला, तबस्सुम बड़ौदावाला, श्री अबुतुराब औड़ा वाला, श्री साबिर हुसैन कादररसियाजी वाला को सांत्वना पुरस्कार से नवाज़ा गया और विशेष पुरस्कार कुमारी फातिमा बानु शब्बीर हुसैन R.G. और फातिमा बानु अकबर अली मण्डीवाला ने प्राप्त किया।

हमारा सवाल : जमाअत की जवाबदेही व पारदर्शिता पर आपके तास्सुरात ?

Accountability and transparency of Jamaat. What are your views on this?

Please send your contribution to: The Editor : All World Bohra Journal , 73 Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

इदारिया

शायद तेरे दिल में उतर जाये मेरी बात!

दुनिया में जुल्म जब हद से ज्यादा बढ़ जाता है, इन्सानियत का चिराग बुझने लगता है। तब कुदरत की तरफ से पैग़म्बर का जुहूर होता है। लेकिन जब सामाजिक अन्याय ओर बुराईया, समाज के ठेकेदारों की जबरदस्तीयां, धार्मिक उन्माद और अंध–भक्ति अपनी सीमा लांध देती हैं तब जाति, वर्ग, समाज और देश में कोई तहरीक जन्म लेती है। यह तहरीक समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक उसूलों से सम्बन्धित होती है। इससे बेशक जंतात्रिक मूल्यों का पतन होना रूकता है और विशेष वर्ग, समाज ओर राष्ट्र का कल्याण होता है। लोगों की तकलीफों को दूर करने वाली एसी तहरीकों को लिये जाहिर है बरसरे इक़तिदार आकाओं की तरफ से विरोध होता है। और जिनका जुल्म भारी कुरबानियां देने के लिये जागे हुए लोगों को मजबूर करता रहता है।

बोहरा यूथ समाज सुधार की तहरीक भी एक ऐसी ही तहरीक है जिसे धर्मांध लोगों ने धर्म विरोधी रंग देकर जनता को भ्रम में डालने की बराबर नाकाम कोशिश की है। जबकि यह तहरीक इस्लाम के दायरे में शरीयत की तमाम उसूलों की पाबंदी करते हुए समाजी बराबरी, इसांनी अधिकारों की हिफ़ाजत, कौम में हर तरह की तरक्की की राहें खोलने, जीवन स्तर बढ़ाने, नयी पोध के लिये सहुलियतें पैदा करने और तानाशाहों के जुल्म और ज़्यादतीयों से कौम को राहत दिलाने के लिये शुरू हुई है। यही वक्त का तक़ाज़ा भी है।

लेकिन ऐसे कारनामें अंजाम देने मैं इसे भारी भरकम कुरबानियां देने को मज़बूर होना पढ़ा है। घर टुटे है, दिलों में दरारें पढ़ी है, रिश्तों में बिखराव हुआ है, पुलिस, अदालतों और जैलों की सख्तीयां सहनी पड़ी है। धार्मिक स्थलों जाने की पांबदी तो अभी भी कायम है। फिर भी इन कठिन मंज़िलों को पार करती हुई यह तहरीक रचनात्मक कामों को कामयाबी के साथ हमेशा अंजाम देती रही है। उदयपुर शहर के सम्प्रादायिक वातावरण को खुशग्वार बनाने के लिये विरोधी फरमान के बावजूद ईद–दिवाली मिलन के जश्न कितने कामयाब रहे हैं। यह जनता अच्छी तरह जानती है कि उदयपुर में जरूरत मंद मरीजों को खून देने की पहल बोहरा यूथ ने की और आज यह जागरूकता हर समाज में आयी है। बोहरा यूथ ने पहली बार एम्बूलेस शुरू की आज लगभग हर समाज के पास अपनी एम्बुलेंस इस खिदमत के लिये तैयार रहती है। सभी समाजों में समूहिक विवाह की परिपाटी की सूत्रधार भी यही तहरीक है। बोहरा यूथ के दोनों स्कूल सर्वधर्म सम्भाव का नमूना पेश करते है। बोहरा यूथ डिस्पेंसरी भी विविध सेवाओं के लिये जन–हित का आधार बनी हुई है और तरक्की की बुलन्दियों तक पहुंचने वाला दि उदयपुर अरबन कॉ–आपरेटिव बैंक भी बोहरा यूथ की पहल का नतीजा है।

इसीलिए बोहरा यूथ की तहरीक समाज के लिये वरदान है समय की जरूरत है इसे नफरत से नही प्यार से देखिये। क्योंकि प्यार ही प्यार है।

आबिद अदीब

बोहरा यूथ की मुजाहिद ख़्वातीन

इसलाही तहरीक वह भी कठ मुल्लाओं की कारकिर्दगी पर सवालिया निशान उठाती हो ख्वातीन की बराबर की हिस्सेदारी के बिना सम्भव हो ही नही सकती। हमारी तहरीक में भी अगर बहनें न हो तो शायद बोहरा यूथ का वजूद न हो। तहरीक को आगे बढ़ाने मे बहनों ने अपनी जिम्मेदारी को पूरी तरह समझा एक ओर इदारे कायम मे आया वह है बोहरा यूथ गर्ल्स विंग। गर्ल्स विंग की बुनियाद डालते वक्त तत्कालीन ज़िम्मेदार बहनों में जिसमें मोहतरिमा हमीदा बाई का नाम सरे फहरिस्त है ने मिल कर पूरी दूरअंदेशी के साथ इदारे को कयाम करने का तहिईया किया और इसके मकसद में तहरीक के अलावा बहनों की तालीमों तरबीयत, उनकी माली परेशानियां, सेहत से जुड़ी परेशानियों के निराकरण को शामिल किया। बहनों ने न सिर्फ इन अग्राजो मकासिद को संविधान का हिस्सा बनाया बल्कि उस पर अमल करने की पहल भी की। अपनी बुनियाद के पहले ही साल में एक तरफ तहरीक की रोज़ मर्राह की परेशानीयों से जूझती रही और दूसरी तरफ एक लाइब्रेरी कायम की। सिलाई, बुनाई और उर्दू क्लासे शुरू की इन सब कामों के लिये बहनों के सर्मपन का यह आलम था कि वह अपने खान–पान की कोई फिक्र नहीं करती थी कभी–कभी अपने फैमेली की भी सुध नहीं ले पाती थी। बोहरा यूथ की बहनों के समर्पन की दासतां बोहरा यूथ गर्ल्स विंग की बहनों की जुबानी इस कॉलम ज़रिये प्रस्तुत की जा रही है।

फातिमा बाई आर. वी.

फातिमा बाई आर. वी. की पैदाइश ऐसे परिवार में हुई जो पहले ही अपनी कौम के अलावा दीगर समुदाय से भी अच्छे तआलुकात रखता रहा है। फातिमा बाई अपने किशोरावस्था से ही समाज सेवा में पूरी दिलचस्पी रखती थी अपकी समाज सेवा में दिलचस्पी में बहुत बड़ा रोल महिला परिषद का भी रहा है जिसकी आज भी वह सक्रीय सदस्य है। बोहरा तहरीक की बुनियाद का आप पर गहरा असर था लिहाजा परिवारिक दबाव की चिंता किये बिना ही हर मोर्च आगे रहा करती थी। ख़्वाह वह

कोई झापन देना हो, परेशान लोगों की सेवा करना हो अथवा बहनों की फलाह व बेबूदी के लिये कोई प्रोजेक्ट करना हो। अपकी दिलचस्पी का आलम यह था कि आपकी वालिदा बहुत सख्त बीमार थी जिन्हें छोड़ कर तहरीक की खातिर कलकत्ता चली गयी सफर के दौरान आपकी वालिदा दुनिया से चल बसी। तहरीक के शुरूआती दौर में जब बहुत काम हुआ करता था तब फैमिली जिम्मेदारीयों का ख्याल किये बिना ही आप दिन–दिन भर मोर्चे पर डटी रहती थी। यही वजह है आज आपके बच्चे यह कहने में नहीं चूकते कि जितना वक्त आपने तहरीक को दिया अगर हमें देती तो शायद उंची तालीम हासिल कर आला मुकाम पर होते। हालांकि फातिमा बहन को इसका कोई मलाल नहीं है। मगर अफसोस इस बात का है कि वर्तमान *generation* को तहरीक का पूरा इल्म ही नही हैं न ही जमाअत व बोहरा यूथ की जानिब से एसी मुक्कमल कोशिश हो रही है जो 1970 के दशक जैसा जज़्बा वर्तमान पीड़ी के दिलो दिमाग मे बैठा सके और वह उसी जज़्बे के साथ तहरीक को आगे बढानें में अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा कर सके। अगर एसा न हुआ तो हमारी कुरबानीयों का कोई महत्व नहीं रह जायगा। अल्लाह अपकी उम्र दराज करें।

आमिना बाई सनवाड़ वाला

आमिना बाई सनवाड़ वाला के बवकार व धर्म परायण खातून है, आपकी मौजूदगी हमेशा ताकत हुआ करती है। तहरीक का हर फर्द आपके वकार से पूरी तरह वाक़िफ है। आप एक बहुत असूदा (Prosperous) परिवार से तआल्लुक रखती है लिहाज़ा कोठार के महमानों का आना जाना आपके यहां लगा रहता था और इनके आदर सत्कार में कोई कसर नही रखती थी। लिहाजा कोठारी अइयाशी से पूरी तरह वाकिफ थी तहरीक के शरूआती दौर में कुछ समझ नही पा रही थी कि आखिर हो क्या रहा है। गालियाकोट काण्ड में जब बिला वजह आपकी बेटी को पीटा गया और आपके पूरे परिवार के साथ लानत मलामत की गयी तब कहीं आपका खून खोल उठा अचानक आप चिल्ला उठी ''बेकसूर लोगों को इस तरह पीटना, बेइज्जत करना अल्लाह को कभी मंजूर नही हो सकता''। और पूरी कूव्वते इरादी के साथ तहरीक में शामिल हो गयी।

आप भी गर्ल्स विंग की चंद जिम्मेदार फाउण्डर मेम्बरों में मुकाम रखती हे, तहरीक के किसी भी मोर्चे पर चाहे वह जुलूस, भूख हड़ताल, कांफ्रेन्स, मज़हबी इजतिमा, शबाबी अंधे अकीदत मंद लोगों द्वारा बेकसूर लोगों को पीटना हो न सिर्फ बराबर शरीक रहती है बल्कि अपने फर्जदों को भी बराबर शामिल रहने की ताक़ीद करती है। यही वजह है कि न सिर्फ आप खुद बल्कि आपका पूरा परिवार तहरीक के हर प्रोग्राम मे सक्रीय रूप से हिस्सा लेता है। अल्लाह आपकी उम्र दराज़ करें।

याहया अली एडवोकेट के जीवन पर एक नज़र

हर माह हमारा यह प्रयास रहेगा कि हमारे उन बुर्जुगों के जीवन का सार प्रस्तुत करें जिसकी तहरीक को दिशा देने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। परन्तु वह हमारे बीच नहीं रहे। हमारी दुआ है कि पाक परवरदिगार की रहमत हमेशा उन पर बनी रहे।

याहया अली एडवोकेट दाऊदी बोहरा समाज की एक ऐसी मशहूर शख़सियत का नाम है, जो उदयपुर शहर के किसी वर्ग या तबक़े में तआरूफ का मोहताज नहीं। वे उर्दू–हिन्दी के क़लमकारों, अदीबों, बुद्धिजीवियों, वकीलों, राजनीतिज्ञों में यकसांतौर पर मक़बूल थे। सुधारवादी बोहरों में तो उनकी हैसियत एक मार्गदर्शक की थी।

एक व्यापारी घराने में 25 मई, 1925 ई. को जन्मे याहया अली को बचपन से ही पढ़ने – लिखने का शौक़ था। लिहाज़ा उन्होंने अपने पुशतैनी धन्धे से परे संजीदगी के साथ तालीम पूरी कर वकालत की डिग्री हासिल की और इसे अपना ज़रीयः–ए–मआश बनाया।

मरहूम याहया अली एक चिन्तन शील, मृदुभाषी और स्पष्टवादी व्यक्ति थे। यही वजह थी कि वे अपने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़िवाद और कट्रपन्न से उत्पन्न ग़ैर मज़हबी, ग़ैर इन्सानी और ग़ैर मुनसिफ़ाना परम्पराओं के ख़िलाफ जद्दो–जहद करने और समाज को एक नई दिशा, नया विचार देने के संकल्प को पूरा करने में जुट गये।

मरहूम भले ही पेशे से वकील थे लेकिन उनके भीतर छुपे हुए लेखक ने उन्हें एक हमदर्द इन्सान बना दिया था। कई ऐसे माली हालत से कमज़ोर लोग भी थे, जिनके मुक़द्दमों की पैरवी बिना कुछ लिये कर लेते थे। क़ानूनी ड्राफ्टिंग करने में उन्हें महारत हासिल थी।

सन् 1948 ई. में याहया अली ने उदयपुर में उर्दू की एक साहित्यिक संस्था की स्थापना भी की थी, जिसमें शहर और सूबे के कई नामवर कवियों और साहित्यकारों ने भागीदारी की। जामिआ मिल्लिया, दिल्ली की प्रतिष्ठित पत्रिका ''नई रोशनी'' में समय–समय पर छपते रहे और लोक प्रियता हासिल करते रहे।

इसके अतिरिक्त 1957 ई. से 1961 ई. तक उदयपुर नगर पालिका के पार्षद चुने गये और एक मकबूल जन–प्रतिनिधि की भूमिका अदा की। उदयपुर क्लॉथ मर्चेन्ट, खाँजीपीर मेमोरियल ट्रस्ट, अन्जुमन स्कूल, सैफी हेल्थ होम, बुरहानिया लायब्रेरी, इंडो सोवियत कल्चरल सोसायटी, दाऊदी बोहरा जमाअत और सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्युनिटी आदि अनेक संगठनों में सक्रिय रह कर अपनी अमूल सेवायें दी।

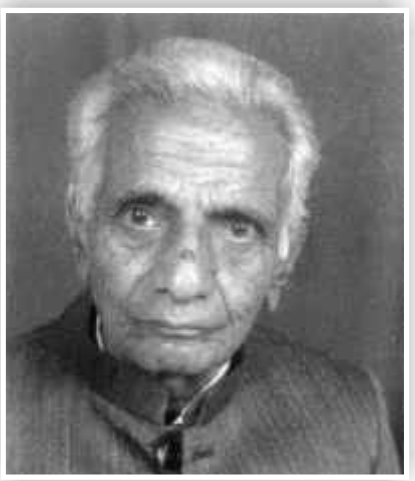

बहुमुखी प्रतिभा के धनी याहया अली को अनेक संगठनों ने सम्मानित किया। बोहरा यूथ की तेहरीक में आपके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। अफसोस है कि ऐसा चिन्तक और विचारक लीडर तारीख 25.2.05 को हमेशा के लिये अलविदा कह गया। खुदा उन्हें अपनी रहमत करे। इदारा इस अज़ीम शखसियत को ख़िराजे–अक़ीदत पेश करता है।

ACTIVITIES REPORT OF AALIM CHARITABLE TRUST

(07 May 2004 to 31 March 2008)

Founded on 07 May, 2004, the AALIM CHARITABLE TRUST (Regd) has achieved substantial progress in its mission during the past 4 years. This report is a tribute to the unflinching support of our donors and the commitment of the Trustees towards a noble cause. The present status of the Trust is that of a Public Charitable Trust without any affiliation. The Trust accounts are audited by M/S V S Nahar & Co, Chartered Accountants. The Trust was granted exemption under Sec 80 (g) of the Income Tax Act valid up to March 2008. A renewal application has been submitted.

Financial Report :

Donations : During the period under review, the trust received donations as follows:

Number of Donors: **31**

Total Amount of Donations: **Rs 8,96,233.00**

Loan Scholarships: The following interest free loan scholarships and Grants-in-Aid were approved by the Board during the past four Financial Years :

1. One student of Engineering at IIT Roorkee -	Rs 75,000/-
2. One student of Engineering in Mumbai University -	Rs 50,000/-
3. One student of MCA at Brindavan College Bangalore -	Rs 1,20,000/-
4. One student of BDS at Govt Dental College, Aurangabad -	Rs 65,000/-
5. One student of MBA at IMT, Ghaziabad -	Rs 21,000/-
6. One student of Engineering at NIT Warrangal -	Rs 75,000/-
7. One student of MBA at Apex Inst of Management, Jaipur	Rs 45,000/-
8. One student of Engineering in Pune University -	Rs 50,000/-
9. Grants-in-aid to seven sponsored students -	Rs 148,260/-
Total -	**Rs 6,49,260/-**

AALIM CHARITABLE TRUST

305 Emerald Towers, Ashwini Marg, Udaipur - 313001

Contact Nos : 9928187372, 9414832106

Students Corner

नाजनीन दाउद B.Com 72 % से पास होकर MLSU की Merit Student रही। उसकी जुबानी वह जिंदगी में अनुशासन को बहुत महत्व देती हैं। उसी की बदोलत वह न सिर्फ पढाई में अव्वल दर्जे में है बल्कि हमारे तहरीक की हर मोर्चे पर भी बराबर शरीक होती है। स्टुडेंट वेलफेयर सोसायटी के कबीना की एक जिम्मेदार मेम्बर होने के नाते वह अपनी तालीम के साथ–साथ न सिर्फ सोसयटी की रोज मर्राह की कार्यवाही में हिस्सा लेती है बल्कि नये–नये विचारों के साथ सोसायटी के दूसरे मेम्बारों को काम करने के लिये प्रोत्साहित करती है। नजनीन के पूरे केरीयर पर रोशनी डालने से पता चलता है कि वह पहली क्लास से B.Com तक अव्वल दर्जे में पास होती रही है। हाल में C.A. की तैयारी में जुटी है। और नाजनीन अपने केरियर के लिये प्रेरणा का स्त्रोत सिद्दीका सेफी को मानती है।

खेरून्निसा रंगवाला एक बहुत होनाहार स्टुडेंट हैं उसने CBSE से Senior Secondary Science (Bio) में 82% अंक प्राप्त कर पास की। वह सोसायटी की कार्यकारिणी की सक्रीय मेम्बर है। पढाई और दीगर जरूरी काम के बाद अपना वक्त स्टुडेंट वेलफेयर सोसायटी के Development में देती है। आप खांजीपीर में रहती है। वहां से वक्त निकाल कर रोज मर्राह के काम के लिये सोसायटी के काम में हाजिर रहती है। बोहरा यूथ तहरीक को मौलिक अधिकार की लड़ाई मानती है और उसकी प्राप्ती के लिये जीवन प्रयन्त संघर्ष करती रहेगी। भाविष्य में Software Engineer बनने की तैयारी में जुटी है।

Letter to the Editor :

आप अपने तअ्स्सुरात और मशविरों से आगाह करते रहें। अधिकतम 200 शब्दों में लिखें।

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words.

Addressed to: The Editor, All World Bohra Journal, 73, Dr. Zakir Hussain Marg Udaipur 313001

शहीद रजब अली मेमोरियल टुर्नामेंट विजेता रहे प्रतिभागीयों की सूचिः

FIELD EVENT

Prize distribution by Madhusudan ji Ranawat
(Guest of Honour)
First, Second & Third Prize -
(Certificate and Momento)

Fast Cycle
1st Prize: Ashfaq Hussain Mavliwala
2nd Prize: Amir Ghoriya
Third Prize: Amir Germanwala

Hurdle Race (Junior Girls)
1st Prize: Tasneem Khakhed
2nd Prize: Arifa Sabeelwala
3rd Prize: Shama Sabeelwala

Hurdle Race (Junior Boys)
1st Prize: Hussain Gumani
2nd Prize: Amir Gumani
3rd Prize: Ammar D.M.

Hurdle Race (Senior Female)
1st Prize: Sadaf Odawala;
Dr Shakira Bag
2nd Prize: Hussaina D.M.
3rd Prize: Zulekha Mandiwala

Hurdle Race (Senior Male)
1st Prize: Tauseef Dalal
2nd Prize: Farhaz Ahmed Raj
3rd Prize: Suhail Afzal Mandiwala

Lemon Race (Junior Girls)
1st Prize: Kaneez Fatima Mandiwala
2nd Prize: Saba Nath
3rd Prize: Shabnam Nath

Lemon Race (Junior Boys)
1st Prize: Munnawer Hussain;
Ali Asgar Tidiwala
2nd Prize: Amir Ali Rangwala
3rd Prize: Aziz Hasan Kholiyawala

Sack Race (Junior)
1st Prize: Nadeem H. Ognawala
2nd Prize: Rizwan Heetawala
3rd Prize: Asim D.M.

Sack Race (Junior)
1st Prize: Akil Hussain Raj
2nd Prize: Suhail Afzal Mandiwala
3rd Prize: Mehzabeen Kolyariwala

Skipping Race (Junior)
1st Prize: Erum Sanwari
2nd Prize: Arwa Talat

Skipping Race (Senior)
1st Prize: Mehzabeen Kolyari
2nd Prize: Zulekha Mandiwala
3rd Prize: Tabassum Bagwala

Slow Cycle Race (Junior)
1st Prize- Ali Abbas Fateh
2nd Prize: Faizan Ali Khakhed

Slow Cycle Race (Senior)
1st Prize: Munawwer Hussain
2nd Prize: Suhail Kasam
3rd Prize: Sibtain Dehli wala

Three Leg Race (Junior)
1st Prize: Saba-Farha Dawood,Fatima Sabeel-Arifa Sabeel
2nd Prize: Hussain Gumani-Amir Ali Rangwala
3rd Prize: Afroz Ahmed Kholiya- Sarwar Abbas Bag

Three leg Race (Senior)
1st Prize: Azhar Ali Bhalam-Tauseef Dalal
2nd Prize: Farhaz Ahmed Raj-Ali Asgar

Chair Race (Junior Girls)
1st Prize: Muztabi Nazar Sultan
2nd Prize: Kaneez F. Mandiwala
3rd Prize: Saba Nath

Chair Race (Junior Boys)
1st Prize: Faizan Firoz
2nd Prize: Firdos Nath
3rd Prize: Ali Abbas Magar

Chair Race (Senior Female)
1st Prize: Shahista Tidiwala
2nd Prize: Farzana Dehliwala
3rd Prize: Shahin D.M.

INDOOR GAMES

Prize distribution: Janab Ismail Ali Biscuitwala
Certificate and Momento for Winner & Runner-Up

Chess (Junior)
Winner: Anees R.G
Runner-Up: Aftab Gurawala

Chess (Senior)
Winner: Muzaffer Ali Khakherwala
Runner-Up: Arif Ali Mahuwala

Table Tennis (Junior)
Winner: Anees Ali R.G
Runner-Up: Faizan Ali Khakhedwala

Table Tennis (Senior)
Winner: Riryaz Raj
Runner-Up: Anees Ali Heetawala

Carom (Junior)
Winner: Aslam Ahmed Katha Wala
Runner-Up: Akhyar Ahmed Kathawala

Carom (Senior)
Winner: Firoz Nath
Runner-Up: Tauseef Dalal

CRICKET

Prize Distribution by Shree Ganshyam Singhji Krishnawat (Chief Guest)
Certificate and Momento for Winner and Runner-Up
Winner: Royal Cricket Club (RCC)
Sajid Hussain Attari (Captain); Shabbir Hussain; Abbas Patwala; Tanveer Sagar; Adnan Hussain; Mustan Sir Lohawala; Adil Ali Panwala; Aftab Kasam; Anwar Hita; Jabir D.M.; Hakim Dilwara; Kosar Ali Ogna
Runner-Up: Fateh Cricket Club (FCC)
Aqib Palana (Captain); Shahid Pachisa; Muzammil K.R; Muzahir K.R; Arif Ali; Arif Bag; Riyaz Peepa; Azhar Ali; Atif Panwala; Asrar Jawariya; Asrar Batli; Kezar Hitawala
Best Perfomance Award : Momento
Best Bowler : Sajid Attari from RCC
Best Batsman : Mustan Sir Lohawala from RCC
Best Fielder : Shabbir Hussain from RCC
Man of the Tournament : Asrar Jawariya from FCC
Special Prize by Noble Bearing and Tools Co.
Prize Distribution by Janab Anees Miyaji
Cash prize of Rs101 for every sixes
Super Sixes : Asrar Jawariya of FCC
Adil Ali Panwala of RCC
Token of Honour to B.A.S.E. Team (Runner-Up in district level tournament)
Distribution by Abid Adeeb
Momento to all team members
Token of Honor for Perfomance at National level in respective field)
Prize Distribution by Janab Anees Miyaji
Chess : Muzzaffar Hussain Khakhed
Under 18 Chess : Anees R.G.
Cricket : Mustansir Amar

REFEREES AND UMPIRES

Shabbir Nasir, Abid Ali R.G, Munnawar Hussain Kagzi, Mumtaz Kadar, Asgar Ali Muhib, Fida Hussain Pachisa, Anees Hitawala, Firoz Nath, Ali Mazhar Rassawala, Ajab R.G, Ketan Ramanuj

Chief Guest of inaugural function Shree Madhu Sudan Ji Ranawat

Chief Guest Of this Function Shree Ghanshyam Singh Ji Krisnawat

Guest of Honour of Function Janab Ismail Ali Biscuitwala

मुख़्तलिफ खबरें .....

स्टुडेन्ट वेलफेयर सोसायटी की सलाना बैठक

स्टुडेन्ट वेलफेयर सोसयटी की सालाना बैठक तारीख 3,जून को सम्पन्न हुई बैठक की शुरूआत हुसैन चाचुलिया वाला द्वारा तिलाव्ते कलाम–ए–पाक से हुआ। जिसमें सोसायटी के सेक्रेट्री अजीज पलानावाला ने सोसायटी के भविष्य की योजना पर रोशनी डाली। इसी पर विस्तार से रोशनी डालते हुए जनाब युसुफ अली आर.जी. ने बताया कि अब तक सोसायटी स्टूडेंट को सिर्फ किताबें ही उपलब्ध करवाती रही है। इंससे एक कदम आगे बढाते हुए अब कॉलेज में आने पर छात्रों की फीस भी सोसायटी वहन करेगी।

इसके लिये मेम्बरों में अनुशासन का होना, उन्हे सोसायटी के प्रति पूरी तरह वाफादार होना बहुत जरूरी है। हाल मे बजट की पॉजीशन को देखते हुए सोसायटी अपने इस कदम के लिये बोहरा यूथ की तरफ देखती है। और इस बात का विश्वास दिलाती है कि जिस तरह 70 के दशक में सोसयटी अपनी जिम्मेदारी को निभाती थी उसी तरह भविष्य में निभाने की कोशिश करेगी।

बोहरा यूथ के जनरल सेक्रेट्री लियाकत अमर ने इस मौके पर बोलते हुए कहां कि जिस जिम्मेदारी से बच्चे काम कर रहे है उसे देख कर 1970 का दशक याद आता है। सोसायटी जो नमुमकिन को मुमकिन कर ने जा रही है उसमें बोहरा यूथ हर मुमकित तआवुन करेगा। इस बाद बोहरायूथ के अध्यक्ष जनाब हुसैन उदयपुरी ने भी अपने विचार रखे।

इस मौके पर दाउदी बोहरा जमाअत के सदर जनाब अबिद अदीब साहब नें जनकमदज के इस होसले को सराहते हुए हर मुमकिन मदद की मंजूरी दी पर इस बात की और इशारा किया कि बच्चे ज्यादा से ज्यादा जिम्मेदार बने और सबसे पहले अपना केरीयर बनाये।

अन्त मे सोसायटी के अध्यक्ष तौसीफ अली टीडी वाला ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन फरहाद हुसैन मंडीवाला ने किया।

दाऊदी बोहरा वेलफेयर सोसायटी की सालाना बैठक।

दाउदी बोहरा वेलफेयर सोसायटी की बुनियाद 1989 में बोहरा बिरदरी के कमजोर तबके को सम्बल प्रदान करने व कौम की सभी सस्थाओं के चंदे की जरूरत को खत्म करने की गरज से डाली गयी।

सोसयटी की 16 सालाना रिर्पोट के मुताबिक सोसायटी के वर्तमान में लगभग 1600 सक्रीय सदस्य है जिसकी जमा रकम 60.00 लाख के करीब है, कुल 450 सदस्यगण इस राशि का उपयोग कर लाभान्वित हे।

बोहरा यूथ के सचिव लियाकत अमर ने सभा को सम्बोधित करते हुए समुदाय के विकास में सोसायटी की भागीदारी की प्रशंसा की और अध्यक्ष शब्बीर फैज़ी व सचिव अल्ताफ मेहमूदा की निःस्वार्थ सेवाओं के लिये आभार व्यक्त किया। आपने समुदाय में बुजुर्गों के लिये एक सेंटर कायम करने के लिये सोसायटी से मदद की दरख्वास्त की।

इस अवसर पर दाउदी बोहरा जमाअत के सदर आबिद अदीब ने बताया कि समाज की बहतरी, खुशहाली व तरक्की इस बात पर निर्भर है कि हम इतिंजामिया की जानिब से जारी किये गये नीतियों पर अमल करें। तंकीद सीमा मे रह कर ही करें।

दाउदी बोहरा वेलफेयर सोसायटी की इस प्रस्ताव को सराहते हुए कि यह एक कम्यूनिटी बैंक की शकल ले रही है। हर सम्भव सहयोग की कामना की और लम्बे अरसे से सोसायटी की फी सबीलिल्लाह खिदमात को तसलीम करते हुए सदर शब्बीर फैजी और सचिव अल्ताफ मेहमूदा का जमाअत की जानिब से शुक्रीया इनायत फरमाया।

अंत में सोसायटी के सस्थांपक सदस्य हुसैन उदयपुरी ने शुक्रिया की रस्म से सभा को विर्सजित किया। संचालन युसुफ अली आर.जी. ने किया।

दीनी कलाम और दीनी तालीम

1. कुरान पाकः ''व अन्न इला रब्बिकल–मुन्तहा (ला)'' (सुरः नज्म आयत 42 पारा 27)

तर्जुमा 1

और यह कि तुम्हारे परवरदिगार ही के पास पहुँचना है

(हिन्दी कुरान मजीद तर्जुमा फतेह मोहम्मद खान जालंधरी)

तर्जुमा 2

और यह बात कि इंतिहा तुम्हारे ''रब'' ही की तरफ है

(इस्माइली तफसीर शेख अहमद अली (रे.अ.)

टिप्पणी – कुरान शरीफ में देखने पर मालूम पड़ेगा कि न सिर्फ यह देखने में एक छोटी आयत लगती है बल्कि इसके खातिमें पर रमुज़े ओक़ाफ की अलामत ला–लाम और अलिफ है! तिलावते कलामें पाक के आदाब में यहाँ रूकने या न रूकने दोनों की इजाज़त है! यहां पर दो लफ़्जी तर्जुमें, दिये गए है! दोनों समान नजर आते है।

परंतु मुफस्सीरीन ने इस आयत का अल्लाह के अस्तित्व की दलीलों में से एक (कोई कहता है पहली) दलील बताया है! मर्हूम शेख अहमद अली साहब (रे.अ.) इस आयत पर तफसीर करते हुए लिखते है कि लोग अल्लाह की सिफात में बहुत कुछ कहते, यह आयत उतरी तो ख़ामोश हो गए। मज़ीद एक हदीस का मफहूम पेश करते हुवे कहते है कि जब बात अल्लाह तक पहुँचे तो खामोश हो जाओ अल्लाह की शान में कुछ नहीं कहा जा सकता। अल्लाह (सु.) तमाम सिफात और अस्माअ (नामो) से मुनज्ज़ा मुकद्दस है बर तर बाला है। दुसरी तफसीर वह यह करते है कि इसकी दूसरी मायना यह कि और उसी (अल्लाह) ही की तरफ मसीर है मआद है, लोग और उनके आमाल अल्लाह तक मुन्तही (इंतिहा को) होंगे, यह अल्लाह अव्वलीन का अव्वल और आख़िरीन का आख़िर है मुब्दी (पैदा करने वाला) और मुन्तही है! (माखुज़ – इस्माइली तकसीर मंजिल 67 पृष्ठ 234) रेखांकित (Underlined) भाग, रोमांचक, होने से इसकी तफसीर Rationalists कैसे करते है वह पैश है। Rationalists 'cause and effect' में विश्वास रखते है!

तर्जुमा

और तमाम (रचनाओं का) का अंत तो निशंशय तुम्हारे पालनकर्ता

('रब') की तरफ ही आएगा।

तफसीर – आलम को तमाम रचनाओं–सर्जन का मूल और कार्य का कारण (i.e. cause and effect) कुदरती कानून में समाया हुवा है। इतना तो स्पष्ट है कि प्रत्येक कारण असका मूल नहीं। नतीजतन

हम देखते है कि आधुनिक विज्ञानिक हर एक कारण के मूल पर शोध करते है। इसके परिणाम में रोज नित नई–नई शोध होती रहती है।

साथ ही यह भी सही है कि हर रचना का मूल तो होना ही चाहिए। इस (माथा पच्ची में) कोशिशों का अंत अथवा छेड़ा आखिर खुदा की पाक जात पर ही खत्म होता है। यह उसके (अल्लाह के) अस्तित्व की मजबुत दलील है।

(माखुज़ दाउदी बोहरा बुलेटिन विशेष प्रकाशन 1964 पृष्ठ 4)

दिखने में छोटी और मायना में आम इस आयत की अब तक की तफसीर का मक़सद हमारे नो जवानों को यह संदेश देना है कि कुरानी उलूम की कोई इंतिहा नहीं (यह कुरान खुद कहता है) इसीलिए इसकी तिलावत में और इसके जंजमउमदजे की गहराई तक पहुँचने के लिए हमारे उलुमा ने ''तफक्कुर'' (गहरा फिक्र) और तदब्बुर पर ज़ोर दिया है। कुरान को इसीलिए बार–बार पढ़ने की हदीस भी है और हुक्म भी, इसके बार–बार पढ़ने और मकहूम समझने के बाद वस–वसे खत्म हो जाते है। अल्लाह हम सबको कुरान की अजमत समझने की तौफीक अता करे। आमीन!

स्थान के अभाव में और आगे बढ़ने के उद्धेश्य से इस आयत की तफसीर को यही समाप्त किया जाता है।

2. अहादीसः

5. गुनाहों पर पछताना एक प्रकार की तौबा है।

6. जमाअत रहमत है और फुरक़त (अलहदगी) अज़ाब है।

7. अमानत अदा करना दौलत है।

8. दीन ख़ेर ख्वाही है, ज़ाती शरफ माल है और अज़्जो शरफ तक़वा है। (माखुज : मजमअल बहरेन भाग–1 शेख अहमद अली 'राज' (रे.अ.)

3. नहजुल बलाग़हः

''तहता कलामिल ख़ालिक व फौका कलामिल मख़लूक'' अर्थात अल्लाह (सु.व.त.) के कलाम अर्थात कुरान से नीची और मख़लूक (मनुष्य) की वाणी से उच्च स्थान रखने वाली किताब है ''नहजुल बलाग़ह''

इस्लाम

''क्या तुमने पूरी तरह समझ लिया है कि इस्लाम क्या है ?

'यह एसा दीन है जिसकी बुनियाद हक़ व सदाक़त पर रक्खी गई है।

'यह इल्म का एक एसा मम्बा है, जिससे अक़्ल व दानिश की मुताद्दित नदिया फूटती हैं।

'यह एक ऐसा चिराग है, जिससे ला–तादाद चिराग़ रौशन होते रहेंगे।

'यह एक ऐसा बलन्द रहनुमा मीनार है जो अल्लाह की राह को रोशन करता है।

'यह उसूलों और एअ़तेकाद का एसा मजमुआ है जो सदाक़त और हकीकत के हर मुतालाशी को इत्मीनान बख़्शाता है।

ऐ लोगों जान लो कि अल्लाह तआला ने इस्लाम को अपनी बरतरीन खुशनूदी के जानिब एक शानदार रास्ता और उबुदियत और इबादत का बलन्द तरीन मेयार करार दिया है। उसने इसे आला अहकाम, बलन्द उसूलों, मोहकम दलायल, ना काबिले तरदीद तफ़्व्वुक़ और मुसल्ला दानिश से नवाज़ा है।

अब यह तुम्हारा काम है कि अल्लाह तआला ने इसे जो शान और अज़मत बख्शी है, उसे कायम रखो, उस पर खुले दिल से अमल करो, उसके मोअतेक़ादात से इन्साफ करो, उसके अहकाम और फ़रामीन की सही तौर पर तामील करो और अपनी ज़िन्दगियों में इसे उसका मुनासिब मक़ाम दो।

(माखुज़ नहजुल बलाग़ह (हिन्दी) प्रकाशकः तब्लीग़ाते ईमानी मुंबई– 1996 प्रकाशन)

बिस्मिल्लाह इर्रहमान निर्राहीम

कुरान मजीद के बारे में कुछ मालूमाती पाइन्ट (Point) निम्नलिखित हैं :–

1. कुरान मजीद में अल्लाह, रब, अना, हुवा इलाह, वाहिद रहमान के नाम से अल्लाह को पहचाना जाता है, इस तरह के नाम कुरान मजीद में 5069 बार आया हैं।
2. कुरान मजीद में सबसे बड़ी सूरत, सूरतू बक़ारा है और सबसे छोटी सूरत, सूरतू ल्कौरूर है, जिसमें कुल तीन आयातें हैं।
3. सबसे बड़ी आयत 282वीं हैं, जो कि सूरतूल्बक़ारा में है, जो या अय्योहल्लज़ीना आमनू से वल्लाहो बिकुल्ले शैइन अ़लीम तक है।
4. कुरान मजीद में सबसे पहली आयत इक़रा बिस्मे की पाँच आयातें नाज़िल हुई। (1) इक़रा बिस्में रब्बिकल्लज़ी ख़ालाक़ा (2) ख़ालाक़ल्इनसाना मन अ़लाका (3) इक़रा व रब्बूकल्इकराम (4) अल्लज़ी अल्लमा बिलक़लम (5) अ़ल्लमल इनसानो मालम याअ़लम और सब से अख़ीरी आयत सूरतूल्बक़ारा की 281वीं आयत वत्क़ू यौमा तरजऊ़ना फीहे इल्लाहे सूम्मा तुवफ्फा कुल्लो नफसिन मा कसाबत वहुम लायुज़लमून (और उस दिन से डरो जिसमें तुम अल्लाह तअ़ला की पैशी में लाए जाओगे। फिर यह शख्स को उसका किया हुआ बदला पूरा पूरा मिलेगा और उस पर किसी किस्म का जुल्म न होगा।)
5. सूरतूल्क़मर में पूरी सूरत में सिर्फ अल्लाह का लफ्ज़ (शब्द) दो दफा आया है। जबकि सूरतू ल्हज में 76 बार आया है और सूरतूल्मरयम में ही रहमान लफ्ज़ 15 बार आया है।
6. सूरतूल्साफफाते में रूकूअ़ एक से दो तक एक एसा रूकूअ़ है, जिसमें 54 आयातें है, जबकि किसी रूकूअ़ में इतनी सारी आयातें नहीं है।
7. पूरे कुरान में मूसा (अ.स.) के किस्से सबसे ज़्यादा हैं और युसूफ (अ.स.) का किस्सा सिर्फ सूरते युसूफ में है।
8. मोहम्मदूर्रसूलल्लाह का नाम कुरान शरीफ में चार जगह आया है :–

(A) सूरत आले इमरान में आयत नम्बर 144 पर वमा मोहम्मदन इल्ला रसूलून क़द ख़लत मिन क़बलेही र्रसूलो (और मोहम्मद (स.) तैरे रसूल ही तो है। आपसे पहले और भी बहुत रसूल गुज़र चुके है।)

(B) सूरत मोहम्मद (स.) में आयत नम्बर 2 पर वल्लज़ीना आमनू वाअ़मलूस्सालिहाते वामनू बिमा नज़्ज़ला अ़ला मोहम्मदिन्व होवल्लहक़्को मिन रब्बेहिम कफारा अन्हुम सय्येआतिहिम व अस्लाहा बलहुम

(C) सूरतूल्आहज़ाब में 40वीं आयत माकाना मोहम्मदन आबा आहादिम्मि नरिजालेकुम वालाकिर्रसूलल्लाहे व ख़ातमन्नबीयेना, वकानल्लाहो बिकुल्ले शैइन अ़लीमा।

(D) सूरतू ल्फतेह में आयत नम्बर 29 पर मोहम्मदून रसूलिल्लाहे वल्लज़ीना माआ़हू अरिद्दाओं अ़ल्लकुफ्फार से वाअजरून अज़ीमा तक में ळें

– Compiled by Fakhruddin R.V.

The world is the prison of believers and the paradise of non-believers - Islamic Proverb

बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी

द्वारा ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल के पुनः प्रकाशन के लिये हार्दिक शुभकामनाएं

Dr. Ishaq Shah वरिष्ठ सर्जन एवं जनरल फिजीशियन (प्रबंधक) 9414316193, रोज 9 से 1 बजे एवं 5 से 7.30 बजे तक	**Dr. Surendra Nath Sharma** शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ 9887111690 रोज शाम 5 बजे से 7.30 बजे तक	**Dr. Rehana Banu** स्त्री रोग एवं सोनोलोजिस्ट विशेषज्ञ 2522620 (R) रोज सुबह 9 से 1 बजे तक
Dr. R.C. Mandowara जनरल फिजीशियन एवं सर्जन, 9351446144 रोज शाम 5 से 7.30 बजे तक	**Dr. Manish M. Agarwal** आर्थोपेडिक विशेषज्ञ (हड्डी स्पेशलिस्ट) 9461385431 हर मंगलवार एवं शुक्रवार शाम 5 बजे से 7.30 बजे तक	**Dr. Birendra** फिजीयो थेरेपिस्ट रोज शाम 5 बजे से 7.30 बजे तक

हमारे यहाँ फिजीयोथेरेपी, सोनोग्राफी, खून व पेशाब की जाँच और सभी तरह की जाँचे न्यूनतम लागत में की जाती है।
प्राथमिक उपचार हेतु दवाईयां मुफ्त प्रदान की जाती है। एवं खतना की सुविधा उपलब्ध है।

Laurels For UK Bohra Girl

Congratulations to **Tarifa Bagasrawalla** of the UK, a reformist Bohra who was named the ICAEW's Young Chartered Accountant of the year 2007.

It had been a busy few years for Tarifa who, whilst studying for her ACA qualification, was the first person to pilot the graduate scheme into KPMG's Transaction Services department where she has advised on a number of business acquisitions.

Outside of work, she helped build a sensory garden for school children in Kingstanding (Birmingham) and completed the Edinburgh Marathon, raising more than £1,250 for the British Heart Foundation.

This is a fantastic achievement for someone in our community and we are sure her family and friends are very proud of her.

Keep up the good work, Tarifa!

- Courtesy: Azad, UK

Second Woman Minister in Qatar Govt

The emir of Qatar recently enlarged the government to 20 members by creating new ministries and appointed a second woman to the cabinet at the head of a reinstated health ministry

Sheikh Hamad bin Jassem bin Jabr al-Thani keeps his posts as prime minister and foreign minister while the key energy, economy and interior portfolios also remain unchanged, according to a decree published by state news agency QNA.

The health ministry which had been demoted to a government agency was reinstated and allocated to a woman member of the ruling family, Sheikha Ghalia bin Mohammed bin Hamad al-Thani.

Sheikha Ghalia becomes the second woman in the government alongside Education Minister Sheikha bint Ahmad al-Mahmud.

Burqa-clad Sumaiya makes history by securing 12 MBBS medals at AMU

Two sparking eyes popping out of traditional Muslim attire burqa (veil) got the attention of the former first citizen of India, Dr A.P.J. Abdul Kalam, Wipro Chief Azim Premji and the audience as Sumaiya, a girl student with hijab, got as many as 12 medals in the prestigious MBBS course at the 58th annual convocation at the Aligarh Muslim University (AMU). Her magnificent feat indicates that Muslim girls are also advancing in the field of education. A female can pursue the studies of MBBS by wearing traditional Hijab (Burqa).

Dr. Sumaiya says that hijab has never come on her way. Her homely atmosphere is religious, hence she adopted that. She had taken admission in class VI in the AMU Girls High School. She was married to a doctor when she was doing MBBS and when she was preparing for final year examination; she gave birth to a child. Despite her responsibilities in the family, she remained busy with her studies and the end result is that she got the highest number of medals.

This year 192 students were decorated with gold and silver medals for their academic performance. Female students performed much better as compared to their fellow male students.

This convocation also signifies that education of girls is an important element within Muslim community and daughters of Muslims are craving to acquire their status in the society with full energy and confidence.

- Courtesy: Muslim Women's Newsletter

Iranian women top inventors' list in Korea competitions

Iran's female inventors have received 23 medals at the Korea International Women's Invention Exposition, coming at the top of the list. Bagging 12 gold, five silver and six bronze medals, Iranian women inventors gained the first place among 25 countries participating at the international event, held in the South Korean capital of Seoul from May 8 to 10, 2008.

Iranian female inventors competed with participants from 25 countries including France, Switzerland, Japan, Rumania, and Australia at the prestigious festival.

धर्म निपेक्षता एवं लोक तंत्र-सुधार वादी आंदोलन में इसकी परासंगिता

पिछले कुछ महीनों में हमनें दो बार चार विषयों पर समूह चर्चा याने ग्रुप डिसकशन रखे हैं। पहली बार काया में हुवे यूथ केम्प में और दूसरी बार फरवरी 2008 में हुई आलमी कॉन्फ्रेन्स में चार विषय थे :–

1. रीछ आउट (बाहर की और पहुंच– मुराद इस से यह कि हम दूसरों तक अपनी बातें पहुंचाएं)
2. फ्यूचर विज़न (भविष्य दृष्टि बोध – मुराद तहरीक का फ्यूचर)
3. पार्टिसिपेशन आफ यूथ (यूवाओं की भागीदारी)
4. रेलीवेन्सी ऑफ सेक्युलरिज्म एण्ड डेमोक्रेसी इन अवर मूवमेन्ट (हमारी तहरीक में धर्म निर्पेक्षता और लोक तंत्र की परासंगिकता)

हालांकि इन चर्चाओं में अनेक मोहक और व्यवहारिक सुझाव सामने आए थे और इन सुझावों को प्रकाशित भी किया जायगा, परन्तु ऐसा भी लगा कि विषय 4 में थोड़ा भ्रम सा दिखा या भारी पड़ा। इसकी संक्षिप्त में नीचे व्याख्या की जाती है ताकि इस पर चर्चा जारी रहे :–

सेक्यूलर शब्द लेटिन है – मध्ययुगीन पश्चिमी संस्कृति में धर्मनिरपेक्षता का उपयोग धार्मिक मामलों को सांसारिक मामलों से अलग रखने में किया गया । बाद में इस अर्थ को किसी भी धर्म भले ही इसके सिधांत अलग–अलग हो, के लिये बढ़ा दिया गया तब से इसका उपयोग इसी मायने में होता आया है कहा जाता है कि धर्मनिरपेक्ष शब्द का इस्तेमाल पहली बार एक ब्रिटिश लेखक George Holyoke ने सन् 1846 ई. में किया था।

स अर्थ को व्यापक्ता देते हुवे अनेक दुसरे शब्दों का चलन शुरू हुवा– मसलनः सेक्यूलर अधिकार (Secular Authority) धर्म निरपेक्ष समाज (Secular Society) एवं सेक्युलर सरकार (Secular Goverment), सेक्युलर राष्ट्र (Secular State) आदि सेक्युलरिज्म (Secularism) Secular शब्द के बाद सेक्युलरिज्म को समझ लेना आसान हो जाता है संक्षिप्त में यह एक वेकल्पिक सिधांत है, जिसमें सार्वजनिक या निजी मामलों में धार्मिक तरीकों से ऊपर उठकर सेक्युलर विचारों का बढ़ावा दिया जाता है।

Democracy (लोक तंत्र, जम्हूरिय)

यह एक ऐसी पद्धति है जिसमें सत्ता की बागडोर या तो सीधी आम जनता या जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में होती है। इसकी वैसे कोई विश्वयापी परिभाषा नहीं मिलती परन्तु ऐसी व्यवस्था में दो सिधांत का होना पाया जाना आवश्यक है।

1. समाज के सभी सदस्यों की सत्ता में पहुंच।
2. समाज के सभी सदस्यों की पूर्ण स्वाधीनता एवं समान नागरिक अधिकारों का समावेश साथ में यह भी है कि इसकी कोई अपनी राजनेतिक विचार धारा नहीं होती अपितु सभी विचार धाराओं का इसमें समावेश होता है याने सभी विचार धाराओं के लिये सहिष्णुता का प्रावधान ।

उपर्युक्त संक्षिप्त व्याख्याओं से हमें यह समझ में आ जाता है कि इन तीनों शब्दों का हमारी सुधारवादी तहरीक में क्या महत्व है या इसकी क्या परासंगिता (Relevance) है। मसलन हमारी तहरीके सेक्युलर मुद्दों को लेकर है न कि धार्मिक। साथ ही हमारी मांग है कि स्थानीय जमात का संचालन लोकतंत्र पर आधारित हो और यह मांगे इसलिये है कि ऐसी व्यवस्था ही से पारदर्शिता (Transparency) और जवाबदेही (Accountability) संभावित है।

उम्मीद है उपर्युक्त संक्षिप्त व्याख्या के बाद इस पर आगे सुझाव या विचार आसान हो जाएंगे। पाठक अपने विचार जर्नल में भी व्यक्त करने को आमंत्रित है।

जनाब असर अली इंजीनीयर मुंबई स्थित दो संस्थाएं Centre for the Study of Secularism and Society एवं Institute of Islamic Studies के निर्देशक है।

पहली संस्था के लिए आप हर माह दो निबंध ''सेक्यूलर पर्स्पेकटिव'' (Secular Perspective) नाम से और दूसरी के लिए ''इस्लाम और आधुनिक युग'' (Islam and Modern Age) नाम से एक निबंध हर माह लिखते है। इस्लाम एण्ड मोडर्न एज बोहरा क्रोनिकल में हर माह शाय होता है हमारे जर्नल में हम ''सेक्युलर पर्स्पेकटिव''के कुछ लेखों को प्रकाशित करना शुरू करते है, इनका मूल स्वरूप कायम रखने के लिहाज़ से इसकी भाषा अंग्रेजी ही रहेगी।

ISLAM: MUSLIMS AND TERRORISM - Part II

By Asghar Ali Engineer

Continued from last month...

All empire builders use violence and then justify it in the name of religion or patriotism or security. America today uses violence on largest scale imaginable and causes havoc because it wants to control whole word for its material resources. It attacked Afghanistan, Iraq and Vietnam before, only to control oil and other resources. And as Vietnamis were forced to fight in their own way now Osama and their followers are fighting against America.

Of course there is big difference between Vietnam's fight against American aggression and Osama bin Laden's use of violence. Vietnam was a country and it was defending itself and Osama is a fugitive from Saudi, represents no country and leads a group founded by him al-Qaida and uses hit and run tactics and involves innocent citizens in his attacks. Osama has not been authorized by any country, much less by any religious authority, to attack

All leading theologians always condemned him for his terrorism. The problem with media is it never goes in depth. It has no time for it. Its news is related to events and particularly negative events. What we call investigative journalism is rare and again in depth analysis appeals to intellectuals, not to average readers. Then add to this hostile attitude, political agenda of certain vested interests, Zionist lobby in USA and USA's own justification of war of aggression against Muslim countries and one can understand why western media projects Islam as religion of jihad and terrorism.

There is great need to understand various parallel trends in the Islamic world today. Media reporting and statements of certain political leaders has developed a stereotype that Muslims are essentially jihadis and united in their fight against non-Muslims. When we are hostile to a community or a nation, we homogenize it and look for negative traits ignoring diversity and complexities.

It is no different when it comes to Islam and Muslims. Since theologians tend to speak of Islam and not Islams, a message goes that is one single understanding of Islam and all Muslims fall in line with this theological Islam. Sociological and cultural differences in understanding of Islam are totally ignored. Apart from Sufis there are several Muslim sects who do not approve of use of violence as integral part of Islam.

It would be of great interest to know that among all other Islamic sects Ismailis consider jihad as one of the seven pillars of Islam (generally Muslims believe in five pillars) as at one time in history Ismailis were involved in long struggle for power with Abbasids and yet today Ismaili communities throughout the world are most peaceful communities. This clearly shows that violence is political, not religious necessity.

Christians too, despite Biblical doctrine of love and presenting other cheek if slapped on one cheek, came out with the theory of Holy Warâ€™ during crusades and the Geeta pronounced concept of dharmayuddha. We find so much violence in Buddhist countries like Sri Lanka and Thailand. Thus it would be seen that all religions talk of love and peace and all religions permit use of violence in defense. But the followers often misuse the concept of defensive violence for aggressive purposes.

Media may have its own compulsions, politicians may have their own needs, but scholars should not buy their formulations. They must fight their own prejudices and go for in depth understanding of issues. Intellectuals and scholars should be committed to quest for truth as peace and non-violence is not possible without truth. Gandhiji insisted on truth and even said truth is God in order to promote peace and no-violence.

War needs propaganda for its justification and propaganda is based on half-truths and outright lies and peace needs truth and nothing but truth. It is quest for truth which brings peace of soul " nafs-i-mutmaâinnah or shanty. Desire for controlling others and political power creates unrest and violence. Today Middle East is a war torn zone as it sits over unlimited source of oil. It is control over oil which tempts America to attack Arab countries and people like Osama indulge in reactive violence. Terrorism is reactive violence whereas state violence is active violence. Thus terrorism is not all about jihad but reaction to American violence for its lust for oil.

- Center for Study of Society and Secularism Mumbai
E-mail: csss@mtnl.net.in

सच्चर कमेटी की सिफारिशें लागू किए जाने के बाद अल्पसंख्यक छात्रों को मिलने वाली छात्रवृत्ति से उपजा विवाद

जयपुर – प्रदेश की भाजपा सरकार की ओर से शिक्षा के क्षेत्र में सच्चर कमेटी की सिफारिशें लागू करने के बाद पार्टी, सहयोगी संगठनों और सरकार में इसका विरोध शुरू हो गया है। मंत्री पदाधिकारियों के साथ ही संघ ने भी दबी जुबां में सरकार के फैसले का विरोध किया है। सच्चर कमेटी की सिफारिशें लागू करते हुए सरकार ने अल्पसंख्यक छात्र–छात्राओं को 1 करोड़ 93 लाख रूपए की स्कॉलरशिप को मंजूरी देने की जानकारी केंद्र को भेजी है। इधर भाजपा के ही कई मंत्री पदाधिकारियों ने सरकार के फैसले की मुखालफत आरंभ कर दी है।

सच्चर कमेटी की सिफारिशों का विरोध ठीक नहीं

उदयपुर.– केंद्र सरकार द्वारा सभी राज्यों में सच्चर कमेटी की सिफारिशें लागू करने व अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों को छात्रवृत्ति देने का भाजपा नेताओं द्वारा विरोध करने की कांग्रेस पदाधिकारियों ने निंदा की है।

शहर जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष डॉ. मधुसूदन शर्मा, पूर्व विधायक त्रिलोक पूर्बिया, डीआई खान, रियाज हुसैन, मो. नासिर खान, बतुल हबीब, रशीद अहमद, मो. अयुब, मो. शरीफ छीपा आदि ने कहा कि भाजपा सरकार के मंत्री, पदाधिकारी व विशेषकर समाज कल्याण मंत्री मदन दिलावर के मुखालफत करने से उनकी ओछी मानसिकता सामने आ रही है। केंद्र सरकार द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के विकास व उत्थान के लिए लागू की जा रही कल्याणकारी योजनाओं का विरोधकर भाजपा नेताओं ने छद्म धर्मनिरपेक्ष छवि को उजागर किया है।

(साभार : दैनिक भास्कर)

दूसरी ख़बरे – टिप्पणी के साथ

अख़बार पढ़िये, जागरूकता बढ़ाईये

अखबार ने वर्ल्ड एसोशियेशन ऑफ न्यूज पेपर्स (WAN) के सर्वे के आंकड़ो के आधार पर बताया है कि विश्व समाचार पत्र बाजार में भारत दूसरे नम्बर पर है। सर्वे में दिये गये चार स्थानों में चीन, पहले, भारत दसूरे, जापान तीसरे और अमेरीका चौथे स्थानों पर हैं।

चीन में हर रोज 10 करोड़ 70 लाख अखबार बिकते है। भारत में यह संख्या 9 करोड़ 90 लाख, जापान में 6 करोड़ 80 लाख और अमेरीका में 5 करोड़ 10 लाख हैं।

सर्वे में यह भी है कि संसार के 100 ''बेस्ट सैलिंग'' दैनिकों में से 74 एशिया में है। इनमें से चीन, भारत और जापान का हिस्सा 62 है।

भारत में यह सब बढ़ती साक्षरता और प्रोधोगिकी (Technology) के विकास एवं उपयोग के कारण है। - DNA

टिप्पणी :– समाचार पत्रों को पढ़ने से जहां साधारण ज्ञान का विकास होता है वहीं जागरूकता भी बढ़ती है। किसी भी प्रगतिवादी तहरीक में जागरूकता का होना एक आवश्यक तत्व है। हमारी अपील है कि हमारे साथी इस पर ध्यान दे। साथ ही लायब्रेरी संचालकों को भी बदलते वक्त और शौक को ध्यान में रख कर अपने जखीरे के विषयों (Subject) और अन्तर्वस्तु (Contents) पर ग़ौर करने की अपील है युवाओं और बच्चों को समाचार पत्रों की उपयोगिता समझाने और उस ओर उत्साहित करने के साथ–साथ उनमें कुतुबबीनी का शोक भी पैदा करना चाहिए। दारल मुतालिअतुल बुरहानिया (हमारी लायब्रेरी) में हजारों किताबें हैं। यह जखीरा अपने 'दीदवर' की तलाश में है।

–इदारा

लंदन – अमेरीका राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यु बुश ने माना कि ईरान की नागरिक प्रमाणु उर्जा की मांग न्याय संगत है। बुश की इस प्रेस कांफ्रेन्स में ब्रिटिश प्रधानमंत्री, गोरडन बराउन भी मौजूद थे। दोनों ने वहाँ ईरान की ''प्रमाणु महत्वकांक्षा'' के विरूद्वसंयुक्त मंच प्रस्तुत करना चाहा।जब यह बयान बाजी हो रही थी ईरान ने अपने ''यूरेनियम समृद्धि'' (uranium enrichment) प्रोग्राम को निलम्बित करने से एक बार फिर इंकार कर दिया। ऐसा उसने छ विश्व शक्तियों, जिसमें अमेरीका भी शामिल है, द्वारा दिये गये एक प्रोत्साहन पैकेज (Incentives Package) के बावजुद किया। . – एजेन्सी

टिप्पणी :– जार्ज बुश के ऐसा पहली बार कहने से पहले पुरी दुनिया के अकलमंद मुबस्सिरों ने और एटमी मामलों के जानकारों ने कहा है और लगातार कहते आ रहे हैं कि जो बनावटी समस्या खड़ी कर दी गई है, उससे और ईरान की तथाकथित ''प्रमाणु शक्ति'' बनने की महत्वकांक्षा का हल न तो युद्ध है और न फोजी कार्रवाई की धमकियां।

याद रहे कि 9/11 के पश्चात् अमेरीका ने एक कल्पनीय ''ग्रीन भूत'' का निर्माण कर अफगानिस्तान पर हमला किया। जबकि ''ग्रीन भूत'' को पैदा करने वाला ही अमेरीका था।

वर्ष 2003 में इराक पर हमला करने के लिये इराक पर ''बड़े पैमाने पर तबाही मचाने वाले हथियारों'' (Weapons of Mass Destruction-WMDs) के निर्माण और रखने का आरोप लगाया था।

कहने को तो आज का विश्व एक आधुनिक, प्रगतिवादी, न्यायिक, व्यवस्था को कायम करने वाला विश्व है, परन्तु इन आदर्शो को इन तथाकथित बड़े एवं साम्रथ्य राष्ट्रों को लागु करने का साहस किसी में नहीं। 'जिसकी लाठी उसकी भेंस' का नियम आबे हयात पिया हुवा है।

– इदारा

For more news on Progressive Dawoodi Bohras from over the world, visit http://dawoodi-bohras.com/

ध्यानाआर्कषण

पिछले माह बोहरा जर्नल के पृष्ठ 8 कॉलम 2 में मजहबों पर बाहमी गुफतगू के नाम से छपी खबर के अतंर्गत बोहरा कोंनीकल के अंतिम पृष्ठ छपी खबर के मुताबिक इस आयोजन में मुस्लिम समुदाय के करीब सभी फ्रिके यहां तक कि दुर्ज, सुलेमानी जैसे बोहरा फ्रिकों को जिनकी तादाद दाउदी बोहरा फ्रिके से बहुत कम है मदु किया गया। परन्तु दाउदी बोहरा फ्रिका जिसकी तदाद दस लाख से ज्यादा है मदु नहीं किया गया जो दुनिया की नज़र में दाउदी बोहरा फ्रिके की अहमीयत पर सवालिया निशान खड़ा करता है।

Obituary

हुसैनी संचावाला से सुधार वादी बोहरा अंदोलन के एक सरगर्म रूकन थे। आपने उन आंदोलनकारियों में से थे जिन्होंने नोमान अली कॉन्ट्रेक्टर और सैफुद्दीन पटवा जैसे सुधारवादीयों के साथ सैयदना ताहिर सैफुद्दीन साहब के वकत से चल रही कोठार के खिलाफ बगावत का परचम उठाया। आपने नोमान अली कॉन्ट्रेक्टर और सैफुद्दीन पटवा के सहयोग से प्रोग्रेसिव प्रिटिंग प्रेस की बुनियाद डाली जहां से लम्बे अरसे तक बोहरा सुधारवादीयों का एक मात्र गुजराती अखबार ''बोहरा बुलेटिन'' का संपादन व प्रकाशन किया। आप 26 जुलाई 2008 को 84 साल की उम्र मे इतिंकाल फरमा गये।

हुसैन हमदानी बोहरा सुधारवादी आंदोलन एक जानी मानी शख्सीयत थी। आपका इतिंकाल कानाडा के ऑन्टेरियों प्रोविंस में जुलाई के पहले सप्ताह में हो गया। आपकी पैदाइश यमन में हुई थी। कुछ अरसे बाद आपने परिवार सहित युगाण्डा से कनाडा में जा बसे वहां आपने तहरीक को कायम करने की गरज से कई कारकिदगी अजांम दी।

आपने ऑन्टेरियों में इसलाह पसंद बोहरा के लिये एक मरकज़ कायम करने की गरज से 100000 कनेडियन पॉन्ड या 33587 USD का अतिया इनायत फरमाया व आम मुस्लमानों के लिये एक मस्जिद आंटेरियों के सेंट केथेरीन में कायम की जो मस्जिदें नूरी के नाम से कायम है।

अल्लाह रहमत करें और अहलो अयाल को सब्रे जमील अता करें। आमीन। **(साभार : बोहरा क्रोनिकल)**

Advertisement tariff rate :
Front Page color @ 50 1centi column
Back Page color @ 40 1centi column
Middle Pages color @ 30 1centi column
Front Page B/W @ 35 1centi column
Back Page B/W @ 25 1centi column
Middle Pages B/W @ 10 1centi column

Editorial Board: Editor: Razia Sanwari, Editorial Assistant : Tauseef Hussain Mandiwala.
Advisory Board: Abid Adeeb, Mansoor Ali Bohra, Hussain Udaipuri, Yaqub Ali Zaheer, Mansoor Ali Nathdwarwala & Yusuf R.G.
Published by: Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Phone: 91-0294-2521719, Fax: 91-0294-2524886
E-mail: bohra.journal@hotmail.com
Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg Udaipur - 313001

रजि:RAJH/9396 पोस्ट रजि- नं-RJ/SR/29/12/2006-08

Disclaimer: The views published in this publication are solely the contributors' opinion. The Editor and editorial board holds no responsibilities for it.

SPACE FOR POSTAL ADDRESS